

[2023] 10 एस. सी. आर 101:2023 आई. एन. एस. सी 590

क.

संतोश मेज़ एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड बनाम.

तमिलनाडु और ए. एन. आर. का राज्य। (2009 की सिविल अपील सं. 5731) जुलाई 04, 2023

[एस. रवींद्र भाट और दीपांकर दत्ता, जे. जे.]

तमिलनाडु सामान्य बिक्री कर अधिनियम, 1959-टी. एन. जी. एस. टी. (संशोधन) अधिनियम, 1993 (1993 का अधिनियम संख्या 24)-टी. एन. जी. एस. टी. (दूसरा संशोधन) अधिनियम, 1996 (1996 का अधिनियम No.37)-कराधान प्रविष्टि No.61-टी. एन. जी. एस. टी. (संशोधन) अधिनियम, 1994 (1994 का अधिनियम No.32)-छूट प्रविष्टि संख्या 8-मक्के के स्टार्च से संबंधित अपीलकर्ता-राज्य ने एक छूट अधिसूचना के माध्यम से मक्के सहित बाजरे के उत्पादों को कर से छूट दी-राज्य विधानमंडल ने 'साबूदाने और किसी भी प्रकार के स्टार्च' (कराधान प्रविष्टि No.61) पर कर लगाया-इसी वजह से मक्के के स्टार्च विक्रेताओं के बीच चिंता पैदा हुई-उच्च न्यायालय ने निष्कर्ष निकाला कि मक्के का स्टार्च होगामक्का छूट प्रविष्टि संख्या 8 के संदर्भ में छूट का हकदार है-मक्के का स्टार्च यांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त मक्के का एक उत्पाद होने के कारण, इसे "मक्के की तरह" के रूप में नहीं पढ़ा जा सकता है, "जैसे" को 1994 के अधिनियम संख्या 32 द्वारा बाहर रखा गया है-मक्के का स्टार्च एक प्रकार का स्टार्च होने के कारण, यह 1996 के अधिनियम No.37 द्वारा शुरू की गई कराधान प्रविष्टि संख्या 61 द्वारा कवर किया गया है जो प्रभावी है। "किसी भी प्रकार का स्टार्च"-सामान्य (छूट प्रविष्टि संख्या 8) के विपरीत विशिष्ट (कराधान प्रविष्टि No.61) को देखते हुए, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि मक्के का स्टार्च कर प्रविष्टि द्वारा कवर किया जाएगा न कि छूट प्रविष्टि द्वारा। कानूनों की व्याख्या-कानून अच्छी तरह से तय है कि यदि किसी भी वैधानिक नियम या वैधानिक अधिसूचना में दो अभिव्यक्तियों का उपयोग किया जाता है-एक सामान्य शब्दों में और दूसरा विशेष शब्दों में-व्याख्या के नियमों के तहत, यह समझना होगा कि विशेष शब्द सामान्य अभिव्यक्ति में शामिल करने के लिए नहीं थे; वैकल्पिक रूप से, यह कहा जा सकता है कि जहां एक कानून में सामान्य प्रावधान के साथ-साथ एक विशिष्ट प्रावधान दोनों शामिल हैं, तो बाद वाले को प्रबल होना चाहिए।

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

101

102 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

क.

याचिकाओं को खारिज करते हुए अदालत ने

पकड़ना: **1.** जब **1994** के अधिनियम **No.32** ने अधिनियम की अनुसूची **III** में संशोधन किया, तो छूट प्रविष्टि संख्या **8** में 'लाइक' शब्द शामिल नहीं था जो अब तक छूट अधिसूचना **[14 मार्च, 1970 की 1970 की संख्या 88]** में था। अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार, "लाइक" शब्द का उपयोग एक क्रिया के रूप में, एक संज्ञा के रूप में और साथ ही इसकी सेटिंग के आधार पर एक उपसर्ग के रूप में किया जा सकता है। इसका उपयोग छूट अधिसूचना में 'संज्ञा' के रूप में किया गया था। एक बार जब यह छूट प्रविष्टि संख्या **8** से स्पष्ट हो जाता है, जैसा कि **1994** के अधिनियम **No.32** द्वारा पेश किया गया

है, कि (i) इसमें कोष्ठक के भीतर पहले शब्द के रूप में "जैसे" संज्ञा शामिल नहीं है और (ii) कि मक्का केवल चावल, आटा, आदि के साथ शामिल है (और मक्का स्टार्च नहीं), यह केवल कोष्ठक के भीतर की वस्तुएं हैं जो छूट के उद्देश्यों के लिए, बाजरे के उत्पादों के रूप में योग्य हैं। इसलिए, यह विशेष रूप से बताए गए बाजरे के उन उत्पादों के लिए है, जो छूट प्रविष्टि संख्या 8 के अनुसार अनुसूची III के साथ पठित अधिनियम की धारा 8 के तहत छूट के हकदार हैं।[पैरा 17] [113-एफ-एच; 114-ए]

ग

डी.

2. क्या मक्के के स्टार्च को वर्तमान उद्देश्य के लिए छूट प्रविष्टि संख्या 8 के अनुसार बाजरा उत्पाद माना जा सकता है? यह अदालत ऐसा नहीं सोचती है। मक्का कच्चा उत्पाद है, जबकि मक्का स्टार्च एक संसाधित उत्पाद है। जबकि हम यह मानने के लिए बाध्य हैं कि मक्का छूट प्रविष्टि संख्या 8 के संदर्भ में छूट का हकदार है क्योंकि यह प्रासंगिक मूल्यांकन वर्ष से पहले था, मक्का स्टार्च यांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त मक्का का एक उत्पाद होने के कारण, इसे "मक्का की तरह" के रूप में नहीं पढ़ा जा सकता है, जिसे 1994 के अधिनियम संख्या 32 द्वारा बाहर रखा गया है। मक्के का स्टार्च एक प्रकार का स्टार्च होने के कारण, यह 1996 के अधिनियम No.37 द्वारा शुरू की गई कराधान प्रविष्टि संख्या 61 द्वारा कवर किया जाता है जो "किसी भी प्रकार का स्टार्च" है। शब्दकोश में "कोई भी" शब्द का अर्थ "एक या समान या सभी" है। ब्लैक लॉ डिक्शनरी में, यह समझाया गया है कि 'कोई भी' शब्द के विविध अर्थ हैं और इसका उपयोग 'सभी' या 'प्रत्येक' के साथ-साथ 'समान' या 'एक' को इंगित करने के लिए किया जा सकता है और किसी दिए गए कानून में इसका अर्थ कानून के संदर्भ और विषय वस्तु पर निर्भर करता है। यदि विधायिका मक्का स्टार्च सहित किसी भी स्टार्च को बाहर करने का इरादा रखती, तो इसे छोड़कर एक विशिष्ट प्रावधान किया जाता है।[पैरा 18] [114-बी-डी]

ई.

च

जी.

3. यह कहने के लिए कि विधानमंडल ने एक ही वस्तु के लिए दो प्रविष्टियों का इरादा नहीं किया होगा, एक छूट ए के तहत। एच.

103

संतोष मेज़ और उद्योग लिमिटेड बनाम तमिल नाडु और ए. एन. आर. का राज्य।

श्रेणी और दूसरी कर योग्य प्रविष्टि के तहत। इसलिए, मक्के के स्टार्च को या तो कराधान प्रविष्टि No.61 या छूट प्रविष्टि संख्या 8 द्वारा कवर किया जाना चाहिए। कराधान प्रविष्टि No.61 एक अधिक विशिष्ट विवरण प्रदान करता है और मक्का स्टार्च निस्संदेह एक 'प्रकार का स्टार्च' होने के कारण, इसमें समझा जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि छूट प्रविष्टि संख्या 8 में जो शामिल है वह मक्का है, जो बाजरे का एक उत्पाद है। स्थिति अन्यथा होती यदि छूट प्रविष्टि संख्या 8 या अनुसूची III में किसी अन्य प्रविष्टि में 'बाजरे के उत्पाद' के बजाय मक्के के उत्पाद का विवरण होता।[पैरा 23] [115-बी-डी]

तमिलनाडु राज्य बनाम लक्ष्मी स्टार्च (1990) एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 777; तमिलनाडु राज्य बनाम टीवीएल। इंद्रा

ग

एजेंसियां (पी) लिमिटेड टी. सी. (आर) 902/1999-लागू नहीं होता।

रिलायंस ट्रेडिंग कंपनी, केरल बनाम केरल राज्य **(2011) 15 एस. सी. सी. 762**; एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी लिमिटेड बनाम सीमा शुल्क आयुक्त **(2001) 4 एस. सी. सी. 593**; **[2001] 1 एससीआर 608**; भारत संघ बनाम तुलसीराम पटेल **(1985) 3**

डी.

एससीसी 398:**[1985] 2 पूरक।एस. सी. आर. 131**; बी. शंकर राव

बादामी बनाम मैसूर राज्य **(1969) 1 एससीसी 1**; **[1969] 3 एससीआर 1**; एम/एस। एसोसिएटेड इंडेम मैकेनिकल (पी) लिमिटेड बनाम पश्चिम बंगाल लघु उद्योग विकास

निगम (2007) 3 एससीसी 607:**[2007] 1 एस. सी. आर. 174**-संदर्भित।

ई.

निर्णीत विधि संदर्भ

[2001] 1 एससीआर 608

संदर्भित किया गया है

पैरा **6 (ए)**

[1985] 2 पूरक।एस. सी. आर. 131 पैरा 6 (सी) [1969] 3 एस. सी. आर. 1 को संदर्भित करता है।

च

संदर्भित किया गया है

पैरा **6 (सी)**

[2007] 1 एससीआर 174

संदर्भित किया गया है

पैरा **20**

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय:2009 की सिविल अपील सं. 5731।

जी.

1999 के डब्ल्यू. पी. सं. 14283 में मद्रास उच्च न्यायालय के दिनांक 08.09.2008 के निर्णय और आदेश से।

सह

2009 की सिविल अपील सं. 5732।

एच.

104

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

क.

सुश्री टी. अर्चना, राजीव गुप्ता, विनय राजपूत, सुश्री सुबश्री जगनाथन, के. के. मणि, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।

सी. क्रांति कुमार, विष्णु उन्नीकृष्णन, शिवानी जेना, नमन द्विवेदी, पी. शंकर, दानिश सैफी, सबरीश सुब्रमण्यन, एम. योगेश कन्ना, अधिवक्ता।उत्तरदाताओं के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

दीपांकर दत्ता, जे. द चैलेंज

हमारे समक्ष वर्तमान अपील, विशेष अनुमति द्वारा, अपीलार्थी द्वारा मद्रास उच्च न्यायालय ("उच्च न्यायालय", इसके बाद) की एक खंड पीठ द्वारा पारित आदेशों से की गई है।जबकि अपीलार्थी द्वारा दायर रिट याचिका 1 को खारिज करने वाले 8 सितंबर, 2008 के निर्णय और आदेश को 2009 की सी. ए. संख्या 5731 में चुनौती दी गई है, 10 फरवरी, 2009 के आदेश में उपरोक्त निर्णय और आदेश की समीक्षा की मांग करने वाले समीक्षा आवेदन 2 को खारिज कर दिया गया है, जिसे 2009 की सी. ए. संख्या 5732 में चुनौती दी गई है।

ग

डी.

प्रासंगिक तथ्य

2. वर्तमान अपीलों को लागू करने वाले प्रासंगिक तथ्यों पर नीचे ध्यान दिया गया है:

ई.

क) अपीलार्थी, तमिलनाडु सामान्य बिक्री कर अधिनियम, 1959 ("अधिनियम", इसके बाद) के तहत पंजीकृत, 1975 से मक्के के स्टार्च का सौदा करता है।अधिनियम के तहत मक्के के स्टार्च का वर्गीकरण दो अपीलों में से पहली में विवाद का विषय है।
ख) तमिलनाडु सरकार ने एक अधिसूचना 3 ("छूट अधिसूचना", इसके बाद) के माध्यम से मक्का सहित बाजरे के उत्पादों को अधिनियम के तहत देय कर से छूट दी। छूट अधिसूचना का प्रासंगिक उद्धरण इस प्रकार है:

च

"[...] तमिलनाडु के राज्यपाल 1 अप्रैल 1970 को और उससे बाजरा उत्पादों (जैसे चावल, आटा, ब्रोकेन और चोलम, कंबू, रागी, थिनई, वरगू, समई की चोकर) की सभी बिक्री से छूट देते हैं।

जी.

1 1999 की रिट याचिका संख्या 14283

2 1999 के डब्ल्यू. पी. सं. 14283 में 2008 के आवेदन सं. 135 की समीक्षा करें 1970 का 3 सं. 89 दिनांक 14 मार्च, 1970 ए

एच.

105

संतोष मेज़ और उद्योग लिमिटेड बनाम तमिल नाडु और ए. एन. आर. का राज्य।

कुदिराइवली, मिलो और मक्का) उक्त अधिनियम के तहत देय कर से।

ग) तमिलनाडु विधान सभा ("विधानमंडल", इसके बाद) ने अधिनियम में 4 अनुसूची I में संशोधन किया, जिसमें भाग सी जोड़ा गया और इसमें प्रविष्टि संख्या 53 शामिल की गई, जिसमें 12 मार्च, 1993 से किसी भी प्रकार के 'साबूदाने और स्टार्च' पर 5 प्रतिशत कर लगाया गया था।बाद में, एक अन्य संशोधन 5 के माध्यम से, 'किसी भी प्रकार के साबूदाने और स्टार्च' को अनुसूची I ("कराधान प्रविष्टि संख्या 61", इसके बाद) के भाग बी की प्रविष्टि संख्या 61 में स्थानांतरित कर दिया गया और कर की दर को 17 जुलाई, 1996 से घटाकर 4 प्रतिशत कर दिया गया।घ) 12 मार्च, 1993 के उपरोक्त संशोधन ने मक्के के

स्टार्च विक्रेताओं के बीच चिंता पैदा कर दी। उनमें से एक, मेसर्स लक्ष्मी स्टार्च ने विशेष आयुक्त और वाणिज्यिक कर आयुक्त ("आयुक्त", इसके बाद) से स्पष्टीकरण मांगा। 14 दिसंबर, 1993 के परिपत्र के माध्यम से, आयुक्त ने स्पष्ट किया कि छूट प्रभावी रहेगी-अनुसूची में एक सामान्य प्रविष्टि पर एक विशिष्ट अधिसूचना प्रबल होगी। यह आगे कहा गया कि मक्के से मक्के का स्टार्च प्राप्त करने की प्रक्रिया में सरल प्रसंस्करण शामिल है; इसलिए, मक्के के स्टार्च को 'मक्के के उत्पादों' के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा और छूट अधिसूचना द्वारा कवर किया जाएगा।

ग

डी.

ई.

ड) विधानमंडल ने 1 अप्रैल, 1994 से अधिनियम 6 में संशोधन किया। अनुसूची III के भाग बी की प्रविष्टि संख्या 8 ("छूट प्रविष्टि संख्या 8", इसके बाद) को शामिल किया गया था।

बाजरा (चावल, आटा, ब्रोकेन और चोलम, कंबू, रागी, थिनई, वरगु, समई, कुदिराइवली, मिलो और मक्के की चोकर) "

च

अधिनियम के तहत कराधान से। संशोधन ने छूट अधिसूचना की भाषा को बरकरार रखा, सिवाय इसके कि 'लाइक' शब्द को हटा दिया गया था। हालांकि, वास्तव में, अनुसूची के संशोधन के साथ छूट अधिसूचना ने बल खो दिया, फिर भी, 31 दिसंबर, 1996 और 6 मई, 1997 को आयुक्त द्वारा जारी किए गए स्पष्टीकरणों के आधार पर मक्के के स्टार्च पर छूट अपरिवर्तित रही।

जी.

4 टी. एन. जी. एस. टी. (संशोधन) अधिनियम, 1993 (1993 का अधिनियम संख्या 24)

5 टी. एन. जी. एस. टी. (दूसरा संशोधन) अधिनियम, 1996 (1996 का अधिनियम संख्या 37) 6 टी. एन. जी. एस. टी. (संशोधन) अधिनियम, 1994 (1994 का अधिनियम संख्या 32)

एच.

106

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

क.

च) हालांकि, इस स्थिति के बाद दो बार के विकास हुए-बाद वाला वर्तमान उद्देश्य के लिए महत्वपूर्ण था। सबसे पहले, धारा 28-ए को 6 नवंबर, 1997 से अधिनियम में एक संशोधन 7 के माध्यम से जोड़ा गया था, जो एक वैधानिक प्रावधान के माध्यम से, आयुक्त को अधिनियम के तहत कर की दर के बारे में स्पष्टीकरण जारी करने का अधिकार देता है। दूसरा, धारा 28-ए को शामिल करने के बाद, आयुक्त ने 23 जून, 1998 को एक परिपत्र जारी किया, जिसमें स्पष्ट किया गया कि छूट प्रविष्टि संख्या 8 में मक्के का स्टार्च शामिल नहीं है। उक्त प्रविष्टि केवल कोष्ठक के भीतर सूचीबद्ध उत्पादों पर लागू होती है और इसमें मक्के का स्टार्च शामिल नहीं है जो मक्के के आटे से अलग है और जिसे आम लोगों या यहां तक कि विक्रेताओं द्वारा भी नहीं समझा जाता है। अनुसूची I के भाग डी की प्रविष्टि 67 के अंतर्गत आने के कारण, इस पर 11 प्रतिशत कर लगाया जाएगा। हालांकि, अपीलार्थी से 23 जून, 1998 के परिपत्र को वापस लेने का अनुरोध प्राप्त होने के बाद, आयुक्त ने 8 अक्टूबर, 1998 के एक बाद के परिपत्र के माध्यम से 23 जून, 1998 के पहले के परिपत्र को रद्द कर दिया और स्पष्ट किया कि मक्के का स्टार्च 1 अप्रैल, 1994 से कर योग्य है, क्योंकि अनुसूची III के भाग बी की वस्तु 8 में मक्के का स्टार्च शामिल नहीं है। अनुसूची I के भाग डी की विशिष्ट प्रविष्टि संख्या 61, अर्थात् "किसी भी प्रकार के साबूदाने और स्टार्च" को ध्यान में रखते हुए, इसमें मक्का स्टार्च भी शामिल है, जो 17 जुलाई, 1996 से लगाए जाने वाले 4 प्रतिशत कर के अधीन है और 11 प्रतिशत पर कर नहीं है।

ग

डी.

ई.

छ) उपरोक्त स्पष्टीकरण पर सवाल उठाते हुए, अपीलार्थी ने आयुक्त के समक्ष एक अभ्यावेदन दिया जिसे 28 जून, 1999 को खारिज कर दिया गया। अपीलार्थी को वित्त वर्ष के लिए सामान्य बिक्री कर की वसूली के लिए 8 रुपये का नोटिस दिया गया था, जिसके बाद आयुक्त द्वारा 9 रुपये का अस्थायी मूल्यांकन नोटिस जारी किया गया था। इससे दोनों पक्षों के बीच विवाद शुरू हो गया।

च

सूचीकरण का इतिहास

जी.

3. वर्तमान चरण की ओर ले जाने वाले मामले का न्यायिक प्रक्षेपवक्र नीचे दिया गया है:

7 टी. एन. जी. एस. टी. (संशोधन) अधिनियम, 1997 (1997 का अधिनियम संख्या 60) 8 दिनांक 25 जून, 1999 और 6 जुलाई, 1999

9 दिनांक 27 जुलाई, 1999 ए

एच.

107

संतोष मेज़ और उद्योग लिमिटेड बनाम तमिल नाडु और ए. एन. आर. का राज्य। [दीपांकर दत्त, जे।] ए.

क) मूल्यांकन कार्यवाही शुरू होने के बाद, अपीलार्थी ने तमिलनाडु कराधान विशेष न्यायाधिकरण ("न्यायाधिकरण", इसके बाद) का दरवाजा खटखटाया, जिसमें अस्थायी मूल्यांकन नोटिसों पर सवाल उठाया गया और 8 अक्टूबर, 1998 के परिपत्र की वैधता को चुनौती दी गई। याचिका 10 को 29 जुलाई, 1999 के फैसले के माध्यम से इस टिप्पणी के साथ खारिज कर दिया गया कि अपीलार्थी के लिए उक्त परिपत्र को स्वतंत्र रूप से चुनौती देना और उसी समय मूल्यांकन कार्यवाही को भी चुनौती देना उचित नहीं था; इसलिए परिपत्र की वैधता के बारे में प्रश्नों को मूल्यांकन कार्यवाही में चुनौती दी जा सकती है।

ग

ख) यह इस स्तर पर था कि अपीलार्थी ने 29 जुलाई, 1999 के न्यायाधिकरण के आदेश को रद्द करने की मांग करते हुए उच्च न्यायालय के रिट अधिकार क्षेत्र का सहारा लिया और साथ ही यह प्रार्थना की कि 08 अक्टूबर, 1998 के परिपत्र को भारत के संविधान की धारा 28-ए, छूट प्रविष्टि संख्या 8 और अनुच्छेद 14, 19 (1) (जी) और 265 के अधिकार क्षेत्र से बाहर घोषित किया जाए। वैकल्पिक रूप से, यह प्रार्थना की गई थी कि उक्त परिपत्र 17 जुलाई, 1996 से पूर्वव्यापी रूप से लागू होने के बजाय केवल 08 अक्टूबर, 1998 से संभावित रूप से लागू होना चाहिए।

डी.

ग) उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने शुरू में 25 अगस्त, 1999 को अपीलार्थी की रिट याचिका को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि अपीलार्थी मूल्यांकन प्राधिकरण के समक्ष सभी बिंदुओं को उठा सकता है, जो कानून के अनुसार आगे बढ़ेगा। इस निर्णय से असंतुष्ट, अपीलार्थी ने इस न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। 3 नवंबर, 2000 के एक आदेश द्वारा, अपील को अनुमति दी गई, और रिट याचिका को उच्च न्यायालय द्वारा तय किए जाने के लिए फाइल करने के लिए बहाल किया गया। इस न्यायालय ने निर्देश दिया कि चूंकि धारा 28 ए के तहत जारी 8 अक्टूबर, 1998 के परिपत्र की वैधता को चुनौती दी गई थी, इसलिए उच्च न्यायालय के लिए मामले को निचले अधिकारियों को भेजने के बजाय इस कानूनी बिंदु पर निर्णय लेना अधिक

उचित होगा।घ) पक्षकारों को सुनने के बाद, उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने 8 सितंबर, 2008 के फैसले के आधार पर योग्यता के आधार पर रिट याचिका को खारिज कर दिया। उच्च न्यायालय का विचार था

ई.

च

जी.

10 1999 की मूल याचिका संख्या 881 और 883 11 सिविल अपील संख्या 2000 की 6176

एच.

108

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

कि छूट अधिसूचना और आयुक्त द्वारा जारी किए गए बाद के परिपत्र, जिसमें मक्का स्टार्च को कराधान से छूट देने की मांग की गई थी, बाध्यकारी अधिकार नहीं रखते हैं क्योंकि उनके पास वैधानिक समर्थन का अभाव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि धारा 28-ए, जो आयुक्त को स्पष्टीकरण जारी करने का अधिकार देती है, केवल 6 नवंबर, 1997 से प्रभावी हुई। 8 अक्टूबर, 1998 के परिपत्र में कानूनी वैधता है क्योंकि यह धारा 28-ए को शामिल करने के बाद जारी किया गया था। यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि मक्का स्टार्च छूट के लाभ का हकदार नहीं होगा, उच्च न्यायालय ने 8 अक्टूबर, 1998 के परिपत्र की वैधता को बरकरार रखा, जिसमें 4 प्रतिशत कर के अधीन प्रवेश संख्या 61 के तहत मक्का स्टार्च को वर्गीकृत किया गया था।

ग

ड) निर्णय से व्यथित होकर, अपीलार्थी ने समीक्षा आवेदन को प्राथमिकता दी। यह देखते हुए कि अपीलार्थी द्वारा हस्तक्षेप के लिए कोई मामला स्थापित नहीं किया गया था, उच्च न्यायालय ने 10 फरवरी, 2009 के अपने आदेश के माध्यम से समीक्षा आवेदन को खारिज कर दिया।

डी.

दलों की प्रस्तुतियाँ

4. अपीलार्थी की ओर से पेश हुए विद्वान वकील श्री के. के. मणि ने निम्नलिखित दलीलें प्रस्तुत कीं:

क) उच्च न्यायालय मूल्यांकन वर्ष 1998-99 से संबंधित सही प्रविष्टि पर विचार करने में विफल रहा। छूट प्रविष्टि संख्या 8 ने स्पष्ट रूप से मक्के सहित बाजरे के उत्पादों के पक्ष में छूट की रूपरेखा तैयार की, क्योंकि मक्के का स्टार्च आटे के रूप में होता है, हालांकि आटा केवल अनाज को पीसकर नहीं प्राप्त किया जाता है, बल्कि मक्के के उपचार के माध्यम से इसे पानी में भिगो कर, विभिन्न प्रक्रियाओं के अधीन करके, और अंततः स्टार्च प्राप्त करके, जिसे आटे के रूप में बेचा जाता है, और इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप निश्चित रूप से बाजरे का एकमात्र उत्पाद आटे के रूप को बनाए रखेगा। यह कराधान प्रविष्टि संख्या 61 से अलग है, जो 'किसी भी प्रकार के साबूदाने और स्टार्च' से संबंधित है और साबूदाने को टैपिओका से लिया गया है, 'साबूदाने और किसी भी प्रकार के स्टार्च' वाक्यांश की एक संयुक्त व्याख्या मक्का स्टार्च को बाहर कर देगी और केवल टैपिओका स्टार्च को शामिल करेगी।

ई.

च

जी.

ख) रिलायंस ट्रेडिंग कंपनी, केरल बनाम केरल में निर्णय।

केरल राज्य 12 को इसके समर्थन में संदर्भित किया गया था

12 (2011) 15 एससीसी 762 ए

एच.

109

संतोष मेज़ और उद्योग लिमिटेड बनाम तमिल नाडु और ए. एन. आर. का राज्य। [दीपांकर दत्त, जे।] ए.

यह तर्क कि छूट केवल तभी मिलेगी जब कर का भुगतान करने की देनदारी होगी। अनुसूची I के साथ पठित धारा 3 (2) 'किसी भी प्रकार के साबूदाने और स्टार्च' पर कर देयता पैदा करती है। हालांकि, अनुसूची III के साथ पठित धारा 8 मक्के के स्टार्च के पक्ष में छूट प्रदान करती है, इसलिए छूट प्रविष्टि संख्या 8, सवारी कराधान प्रविष्टि संख्या 61 पर लागू होगी।

ग) तमिलनाडु राज्य में उच्च न्यायालय के निर्णय

बनाम लक्ष्मी स्टार्च 13 और तमिलनाडु राज्य बनाम टीवीएल।

इंद्रास एजेंसीज (पी) लिमिटेड 14 को इस तर्क का समर्थन करने के लिए भी रखा गया कि छूट प्रविष्टि संख्या 8 छूट अधिसूचना से उत्पन्न होती है, जिसकी वैधता को उपरोक्त पूर्व निर्णय में बरकरार रखा गया था और मक्के के स्टार्च को तदनुसार कर से छूट दी गई थी। अतः छूट प्रविष्टि संख्या 8 और कुछ नहीं बल्कि एक वैधानिक प्रावधान के रूप में छूट अधिसूचना की भाषा का पुनः अधिनियमन है और मक्के के स्टार्च को कर से छूट देने के विधानमंडल के इरादे को दर्शाता है।

ग

डी.

घ) जहां तक 'लाइक' शब्द को हटाने का संबंध है, यह तर्क दिया गया कि छूट अधिसूचना की भाषा को बरकरार रखते हुए संशोधन, 'लाइक' शब्द को छोड़ने से, छूट प्रविष्टि संख्या 8 के तहत मक्का स्टार्च को कराधान से छूट देने की निरंतर प्रथा के आलोक में प्रविष्टि के दायरे में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। यह भी तर्क दिया गया कि उच्च न्यायालय ने मूल्यांकन वर्ष 1998-1999 के लिए अनुसूची III के भाग बी की प्रविष्टि संख्या 44 पर विचार करके रिट याचिका और समीक्षा आवेदन दोनों में गलत मूल्यांकन किया, जिसमें न्यायालय के अनुसार मक्का शामिल नहीं है। हालांकि, उपरोक्त प्रविष्टि केवल 2002 में एक संशोधन 15 के माध्यम से पेश की गई थी, जिसमें मक्के के संदर्भ को स्पष्ट रूप से हटा दिया गया था। उस संशोधन से पहले, छूट प्रविष्टि संख्या 8 लागू थी जिसमें मक्का शामिल था।

ई.

च

जी.

च) यह तय कानून है कि अधिनियम की धारा 28-ए के तहत शक्ति का प्रयोग वैधानिक योजना के विपरीत नहीं किया जा सकता है।

13 (1990) एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 777 14 टी. सी. (आर) 902/1999

15 टी. एन. जी. एस. टी. (चौथा संशोधन) अधिनियम, 2002

एच.

110

अधिनियम का, विशेष रूप से जब वर्गीकरण के मुद्दे को न्यायालय द्वारा सुलझा लिया गया हो। यह मक्के के स्टार्च को कर से मुक्त मानने की राज्य की निरंतर प्रथा से स्पष्ट है, जैसा कि समय के साथ जारी किए गए परिपत्रों की एक श्रृंखला के माध्यम से मक्के के स्टार्च को कर देयता से स्पष्ट रूप से छूट दी गई है। छूट के पक्ष में जारी किए गए स्पष्टीकरणों को ध्यान में रखते हुए, 8 अक्टूबर, 1998 का परिपत्र जिसमें पूर्वव्यापी रूप से करों की वसूली की आवश्यकता है, बिना किसी ठोस कारण के केवल एक राय परिवर्तन है और इसलिए इसे रद्द किया जा सकता है।

छ) किसी भी स्थिति में, उपरोक्त परिपत्र का पूर्वव्यापी प्रभाव नहीं हो सकता है और यह केवल जारी होने की तारीख से, यानी 8 अक्टूबर, 1998 को और उससे प्रभावी होगा।

ग

5. अंत में, यह प्रस्तुत करते हुए कि निर्धारण वर्ष के लिए अपीलार्थी छूट प्रविष्टि संख्या 8 के अनुसार मक्के के स्टार्च पर कर से छूट का हकदार है, श्री मणि ने प्रार्थना की कि चुनौती के तहत आदेशों को अपीलार्थी की छूट की पात्रता घोषित करके अलग कर दिया जाए; नतीजतन, अपीलार्थी को अनुमति दी जाए।

डी.

6. प्रतिवादियों की ओर से पेश विद्वान वकील श्री सी. क्रांति कुमार ने विवादित फैसले का समर्थन करते हुए निम्नलिखित तर्क दिया:

ई.

क) सबसे पहले, आकलन वर्ष में मक्के का स्टार्च कराधान प्रविष्टि संख्या 61 के अंतर्गत आएगा, जिसे 'साबूदाना और किसी भी प्रकार का स्टार्च' के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा और यह 4 प्रतिशत कर दर के अधीन होगा। 'किसी भी प्रकार का स्टार्च' शब्द में मक्के के स्टार्च सहित सभी प्रकार के स्टार्च शामिल हैं। निर्णय में

एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी लिमिटेड बनाम कमिश्नर

च

सीमा शुल्क 16 के इस तर्क का समर्थन करने के लिए भरोसा किया गया था कि 'किसी भी प्रकार' शब्दों की व्याख्या समावेशी तरीके से की जानी चाहिए ताकि सभी प्रकार की वस्तुओं को इसके दायरे में शामिल किया जा सके।

ख) दूसरा, छूट अधिसूचना को केवल 1 अप्रैल, 1994 से एक संशोधन के माध्यम से वैधानिक समर्थन प्राप्त हुआ, जिसमें छूट प्रविष्टि संख्या 8 को बाजरा के उत्पादों को छूट देने के लिए पेश किया गया। हालांकि, कराधान प्रविष्टि 'सागो और किसी भी प्रकार का स्टार्च' 1993 से पहले से मौजूद था और इसलिए, लागू प्रविष्टि थी।

जी.

एच.

16 (2001) 4 एस सी सी 593 ए

ग) तीसरा, छूट प्रविष्टि संख्या 8 ने अधिसूचना के तहत प्रदान किए गए छूट प्रावधान को संशोधित किया और 'पसंद' शब्द को हटा दिया जो छूट का लाभ केवल उसमें निर्दिष्ट वस्तुओं तक ही सीमित था। फैसले

भारत संघ बनाम तुलसीराम पटेल 17 और बी. शंकर राव बादामी बनाम मैसूर राज्य 18

मैक्सिम एक्सप्रेसम फेसिट सेसेरे टैसिटम के समर्थन में रखा गया था। सामने रखा गया तर्क यह है कि जब विशिष्ट मामलों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाता है, तो जो कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया है उसे बाहर रखा गया माना जाना चाहिए।

घ) चौथा, छूट प्रविष्टि संख्या 8 में मक्के की परिकल्पना की गई है जो एक कच्चा उत्पाद है न कि मक्के का स्टार्च जो एक प्रसंस्कृत उत्पाद है। इस प्रस्ताव पर आगे जोर देते हुए छूट वाली प्रविष्टि में 'आटा' और 'चोलम की चोकर' जैसी वस्तुओं का उल्लेख किया गया है जो प्रसंस्कृत उत्पाद हैं।

ग

ङ) अंत में, विधायी आशय 2002 के संशोधन से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है, जिसमें छूट प्रविष्टि संख्या 8 को प्रविष्टि संख्या 44 के रूप में पुनर्स्थापित किया गया था, और 'मक्का' के विशिष्ट संदर्भ को समाप्त कर दिया गया था, जिससे सभी मक्का उत्पादों को छूट से वंचित कर दिया गया था।

डी.

7. श्री कुमार ने इस प्रकार प्रस्तुत किया कि अपीलों में कोई योग्यता नहीं होने के कारण उन्हें खारिज किया जा सकता है। उन्होंने इस आशय के आदेश के लिए प्रार्थना की।

ई.

अधिनियम के तहत स्थिति योजना

8. अनुसूची I के तहत प्रविष्टियों पर अधिनियम की धारा 3 (2) के तहत कर लगाया जाता है जबकि अनुसूची III के तहत प्रविष्टियों को इसकी धारा 8 के तहत छूट दी जाती है।

च

9. 14 मार्च, 1970 की छूट अधिसूचना ने इस क्षेत्र को दो दशकों से अधिक समय तक सीमित रखा। जबकि छूट अधिसूचना लागू थी, अधिनियम को 1993 के अधिनियम No.24 द्वारा संशोधित किया गया था। मौजूदा अनुसूची I को एक नई अनुसूची के साथ बदल दिया गया था, और अनुसूची I के भाग C की प्रविष्टि 53 में 5 प्रतिशत की दर के साथ 'किसी भी प्रकार का साबूदाना और स्टार्च' जोड़ा गया था।

जी.

10. 1994 का अधिनियम संख्या 32, अर्थात् तमिलनाडु सामान्य बिक्री कर (संशोधन) अधिनियम, 1994 ने अधिनियम में और संशोधन किया। भाग बी में प्रविष्टि 8

17 (1985) 3 एससीसी 398 18 (1969) 1 एससीसी 1

एच.

112

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

अनुसूची III में वह मद शामिल थी जो अब तक छूट अधिसूचना द्वारा कवर की गई थी और इस प्रकार, इस तरह के संशोधन के साथ इसका संचालन बंद हो गया।

11. 1996 के अधिनियम संख्या 37 द्वारा 'किसी भी प्रकार के साबूदाने और स्टार्च' के संबंध में कर की दर को 5 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत कर दिया गया था।

12. यह देखते हुए कि 'मक्के' के वर्गीकरण के संबंध में वैधानिक योजना में समय के साथ कई बदलाव हुए हैं, हम लागू कर और प्रासंगिक समय अवधि पर छूट वाली प्रविष्टियों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करना उचित समझते हैं।स्पष्टता को सुविधाजनक बनाने के लिए, निम्नलिखित तालिका इन प्रविष्टियों की प्रयोज्यता की गणना करती है:

ग

डी.

ई.

च

जी.

विश्लेषण और निष्कर्ष

13. हमने पक्षकारों के लिए विद्वान वकील द्वारा दिए गए प्रस्तुतिकरणों पर विचार किया है और अभिलेख पर सामग्री का भी अध्ययन किया है।

एच.

14. यद्यपि हम उच्च न्यायालय द्वारा विवादित निर्णय में दिए गए सभी कारणों के साथ सहमत नहीं हैं, हम उसके द्वारा किए गए अंतिम निष्कर्ष से भिन्न होने का कोई कारण नहीं देखते हैं। इसलिए, हम उच्च न्यायालय से सहमत होने के लिए अपने स्वयं के कारण बताने के लिए आगे बढ़ेंगे कि अपीलार्थी किसी भी राहत का हकदार नहीं है।

15. उच्च न्यायालय द्वारा छूट अधिसूचना को वैधानिक समर्थन नहीं होने के लिए गलती से अभिनिर्धारित किया गया था। इसका पाठ शक्ति के स्रोत को दर्शाता है। शक्ति का प्रयोग अधिनियम की धारा 17 के संदर्भ में था, जो कर के भुगतान से छूट देने की राज्य सरकार की शक्ति का भंडार प्रतीत होता है। हालाँकि, कई संशोधन अधिनियमों के कारण, जिनके द्वारा अनुसूचियों को समय-समय पर संशोधित किया गया था, वास्तव में कुछ भी इस पर प्रभाव नहीं डालता है। 2009 के सी. ए. No.5731 पर निर्णय छूट अधिसूचना के आधार पर नहीं बल्कि अनुसूचियों के साथ पढ़े गए अधिनियम की शर्तों के आधार पर दिया जाना चाहिए, जैसा कि 17 जुलाई, 1996 को था, जब 1996 का अधिनियम <आई. डी. 2, यानी तमिलनाडु सामान्य बिक्री कर (दूसरा संशोधन) अधिनियम, 1996 लागू हुआ था। वास्तव में, अधिनियम को 27 मार्च, 2002 से 2002 के अधिनियम, यानी तमिलनाडु सामान्य बिक्री कर (चौथा संशोधन) अधिनियम, 2002 द्वारा संशोधित किया गया था, लेकिन यह सहस्राब्दी के बाद की घटना होने के कारण निश्चित रूप से विचाराधीन अवधि से परे है, यानी, हमें बाद के संशोधन से बहुत अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

ग

डी.

16. ऊपर वर्णित वैधानिक प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य से यह प्रतीत होता है कि संबंधित मूल्यांकन वर्ष की अवधि में या उसके आसपास क्षेत्र में दो प्रविष्टियाँ थीं, अर्थात्, अनुसूची I में "किसी भी प्रकार का साबूदाना और स्टार्च", जिसे हमारे द्वारा कराधान प्रविष्टि No.61 के रूप में संदर्भित किया गया है, और अनुसूची III में "बाजरा के उत्पाद (चावल, आटा, ब्रोक्न और चोलम, कंबू, रागी, थिनई, वरगू, समई, कुदिराइवली, मिलो और मक्के के ब्रैन)" जिन्हें हम छूट प्रविष्टि संख्या 8 के रूप में संदर्भित कर रहे हैं।

ई.

च

17. जब 1994 के अधिनियम No.32 ने अधिनियम की अनुसूची III में संशोधन किया, तो छूट प्रविष्टि संख्या 8 में 'लाइक' शब्द शामिल नहीं था जो अब तक छूट अधिसूचना [14 मार्च, 1970 की 1970 की संख्या 88] में था। अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार, "लाइक" शब्द का उपयोग एक क्रिया के रूप में, एक संज्ञा के रूप में और साथ ही इसकी सेटिंग के आधार पर एक उपसर्ग के रूप में किया जा सकता है। इसका उपयोग छूट अधिसूचना में 'संज्ञा' के रूप में किया गया था। एक बार जब यह छूट प्रविष्टि संख्या 8 से स्पष्ट हो जाता है, जैसा कि 1994 के अधिनियम No.32 द्वारा पेश किया गया है, कि (i) इसमें कोष्ठक के भीतर पहले शब्द के रूप में "पसंद" संज्ञा शामिल नहीं है और (ii) कि मक्का केवल चावल, आटा, आदि के साथ शामिल है (और मक्का स्टार्च नहीं), यह केवल कोष्ठक के भीतर की वस्तुएं हैं जो कोष्ठक के लिए

जी.

एच.

114

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

छूट के उद्देश्य, बाजरा के उत्पादों के रूप में अर्हता प्राप्त करते हैं। अतः बाजरा के उन उत्पादों को विशेष रूप से इंगित किया गया है, जो छूट प्रविष्टि संख्या 8 के अनुसार अनुसूची III के साथ पठित अधिनियम की धारा 8 के तहत छूट के हकदार हैं।

18. क्या मक्के के स्टार्च को वर्तमान उद्देश्य के लिए छूट प्रविष्टि संख्या 8 के अनुसार बाजरा उत्पाद माना जा सकता है? हम ऐसा नहीं सोचते हैं। मक्का कच्चा उत्पाद है, जबकि मक्का स्टार्च एक संसाधित उत्पाद है। जबकि हम यह मानने के लिए बाध्य हैं कि मक्का छूट प्रविष्टि संख्या 8 के संदर्भ में छूट का हकदार है क्योंकि यह प्रासंगिक मूल्यांकन वर्ष से पहले था, मक्का स्टार्च यांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त मक्का का एक उत्पाद होने के कारण, इसे "मक्का की तरह" के रूप में नहीं पढ़ा जा सकता है, जिसे 1994 के अधिनियम संख्या 32 द्वारा बाहर रखा गया है। मक्के का स्टार्च एक प्रकार का स्टार्च होने के कारण, यह 1996 के अधिनियम No.37 द्वारा शुरू की गई कराधान प्रविष्टि संख्या 61 द्वारा कवर किया जाता है, जो "किसी भी प्रकार का स्टार्च" है। शब्दकोश में "कोई भी" शब्द का अर्थ "एक या समान या सभी" है। ब्लैक लॉ डिक्शनरी में, यह समझाया गया है कि 'कोई भी' शब्द के विविध अर्थ हैं और इसका उपयोग 'सभी' या 'प्रत्येक' के साथ-साथ 'समान' या 'एक' को इंगित करने के लिए किया जा सकता है और किसी दिए गए कानून में इसका अर्थ कानून के संदर्भ और विषय वस्तु पर निर्भर करता है। यदि विधायिका मक्का स्टार्च सहित किसी भी स्टार्च को बाहर करने का इरादा रखती, तो इसे छोड़कर एक विशिष्ट प्रावधान किया जाता।

ग

डी.

19. एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी लिमिटेड (ऊपर) में निर्णय

सीमा शुल्क अधिनियम की धारा 2 (22) के खंड (ई) में 'माल' को परिभाषित करने वाले 'किसी भी अन्य प्रकार की चल संपत्ति' शब्दों में सभी मूर्त चल वस्तुओं को उनके उद्देश्यों के लिए माल के रूप में शामिल किया जाएगा। 20. हम इस संबंध में मेसर्स के निर्णय का भी उल्लेख कर सकते हैं।

ई.

एसोसिएटेड इंडेम मैकेनिकल (पी) लिमिटेड बनाम पश्चिम बंगाल लघु उद्योग विकास निगम 19 जहां, किसी भी

च

पश्चिम बंगाल परिसर किरायेदारी अधिनियम, 1956 के प्रावधानों में निहित 'परिसर', इस न्यायालय द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया है कि 'कोई भी' बहुत व्यापक अर्थ का शब्द है और प्रथम दृष्टया इसका उपयोग सीमा को बाहर करता है। 21. हमारा मानना ​​है कि 'किसी भी प्रकार' का उपयोग कर प्रविष्टि के संदर्भ में किया गया है जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इसका उपयोग व्यापक अर्थों में किया गया है जो एक से लेकर सभी तक फैला हुआ है और इसमें कोई अपवाद नहीं है।

जी.

22. कराधान प्रविष्टि No.61 में 'किसी भी प्रकार के स्टार्च' से पहले 'सागो' होने से, हमारी राय में, कोई भौतिक अंतर नहीं पड़ता है। सागो एक स्टार्च है जो विभिन्न उष्णकटिबंधीय के पिथ या स्पंजी कोर ऊतक से निकाला जाता है।

एच.

19 (2007) 3 एससीसी 607 ए

115

संतोष मेज़ और उद्योग लिमिटेड बनाम तमिल नाडु और ए. एन. आर. का राज्य। [दीपांकर दत्त, जे।] ए.

ताड़ के तने। इसलिए, कराधान प्रविष्टि No.61 के तहत जो कर योग्य है वह है 'सागो', जो अपने आप में एक स्टार्च है, साथ ही किसी भी प्रकार का स्टार्च जिसमें स्पष्ट रूप से मक्का स्टार्च शामिल होगा।

23. यह कहने के लिए कि विधानमंडल ने एक ही वस्तु के लिए दो प्रविष्टियों का इरादा नहीं किया होगा, एक छूट प्राप्त श्रेणी के तहत और दूसरी कर योग्य प्रविष्टि के तहत। इसलिए, मक्के के स्टार्च को या तो कराधान Entry No.61 या छूट प्रविष्टि संख्या 8 द्वारा कवर किया जाना चाहिए। यह पता लगाने के उद्देश्य से कि दोनों में से कौन सी प्रविष्टि लागू होती है, हमें उस भाषा को ध्यान में रखते हुए अधिक मेहनत करने की आवश्यकता नहीं है जिसमें दोनों प्रविष्टियां व्यक्त की गई हैं। कराधान प्रविष्टि No.61 एक

अधिक विशिष्ट विवरण प्रदान करता है और मक्का स्टार्च निस्संदेह एक 'प्रकार का स्टार्च' होने के कारण, इसमें समझा जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि छूट प्रविष्टि संख्या 8 में जो शामिल है वह मक्का है, जो बाजरे का एक उत्पाद है। स्थिति अन्यथा होती यदि छूट प्रविष्टि संख्या 8 या अनुसूची III में किसी अन्य प्रविष्टि में 'बाजरे के उत्पाद' के बजाय मक्के के उत्पाद का विवरण होता।

ग

डी.

24. कानून अच्छी तरह से तय है कि यदि किसी भी वैधानिक नियम या वैधानिक अधिसूचना में दो अभिव्यक्तियों का उपयोग किया जाता है—एक सामान्य शब्दों में और दूसरा विशेष शब्दों में—व्याख्या के नियमों के तहत, यह समझना होगा कि विशेष शब्द सामान्य अभिव्यक्ति में शामिल करने के लिए नहीं थे; वैकल्पिक रूप से, यह कहा जा सकता है कि जहां एक कानून में सामान्य प्रावधान के साथ-साथ एक विशिष्ट प्रावधान दोनों शामिल हैं, तो बाद वाले को प्रबल होना चाहिए।

ई.

25. उपरोक्त चर्चा से जो पता चलता है वह यह है कि कराधान प्रविष्टि No.61 किसी भी प्रकार के 'स्टार्च' से संबंधित है जबकि छूट प्रविष्टि संख्या 8 'बाजरा' के उत्पादों से संबंधित है।

च

26. सामान्य (छूट प्रविष्टि संख्या 8) के विपरीत विशिष्ट (कराधान प्रविष्टि No.61) को देखते हुए, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि मक्का स्टार्च कर प्रविष्टि द्वारा कवर किया जाएगा न कि छूट प्रविष्टि द्वारा।

27. अपीलार्थी की ओर से यह तर्क दिया गया कि आयुक्त द्वारा प्रदान किए गए स्पष्टीकरण को पूर्वव्यापी प्रभाव से लागू नहीं किया जा सकता था, हमारी राय में, बिना किसी सार के है। 8 अक्टूबर, 1998 के परिपत्र के माध्यम से स्पष्टीकरण कानून (यानी अधिनियम की धारा 28-ए) द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए जारी किया गया था। जब भी किसी पंजीकृत विक्रेता द्वारा कर की लागू दर के बारे में किए गए आवेदन के अनुसार स्पष्टीकरण उप-के तहत जारी किया जाता है।

जी.

एच.

116

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

धारा (1), या आयुक्त अपने दम पर अधिनियम के तहत कर की दर से संबंधित किसी भी बिंदु को स्पष्ट करता है, या अधिनियम के तहत प्रदान की गई कर के निर्धारण और संग्रह से संबंधित प्रक्रिया उप-धारा (2) के तहत जारी की जाती है, जिसका उद्देश्य कर की दर को स्पष्ट करना है जो अन्यथा निहित है। जैसा कि विवाद उठाया गया है, यदि स्वीकार कर लिया जाता है, तो स्पष्टीकरण जारी करने के उद्देश्य को विफल कर देगा, जब तक कि इसका पूर्वव्यापी प्रभाव नहीं समझा जाता। आयुक्त द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण उन दो प्रविष्टियों के अर्थ को स्पष्ट करता है जो पहले से ही अंतर्निहित थे लेकिन एक भ्रम को जन्म दिया था। इसलिए, इस प्रकृति का स्पष्टीकरण पूर्वव्यापी होना तय है।

28. इसके अलावा, जारी किए गए स्पष्टीकरण की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, हम मानते हैं कि 8 अक्टूबर, 1998 का परिपत्र अधिनियम के प्रावधानों के विपरीत नहीं है।

ग

29. हमने श्री मणि द्वारा उद्धृत निर्णयों पर विचार किया है।

लक्ष्मी स्टार्च लिमिटेड (ऊपर) और टीवीएल। इंड्र की एजेंसियाँ (पी)

सीमित (ऊपर)।ऊपर दिए गए कारणों के कारण, हम मानते हैं कि उक्त निर्णय याचिकाकर्ता की सहायता नहीं करते हैं।

डी.

निष्कर्ष

30. विवादित फैसले को बरकरार रखा जाता है, हालांकि उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित नहीं किए गए कारणों से।अपीलों में कोई योग्यता नहीं पाते हुए, हम उन्हें खारिज कर देते हैं।हालाँकि, दल अपना खर्च स्वयं वहन करेंगे।

ई.

अंकित ज्ञान

याचिकाएं खारिज कर दी गईं।

(सहायक: महेंद्र यादव, एलसीआरए)

च

जी.

एच.